PHILOSOPHY

Hons., Paper VIII (Part-III)

Dr. S. K. Singh
Mob.--9431443951.

कुमारिल का विपरीत ख्यातिवाद

→ कुमारिल भट्ट का भ्रम सम्बन्धी सिद्धान्त विपरीत ख्यातिवाद कहलाता है। इनके अनुसार भ्रम अयथार्थ ज्ञान है, गलत ज्ञान है, मिथ्याज्ञान है। जब हम सीपी को रजत के रूप में देखकर यह कहते हैं कि 'इदं रजतम्' (यह रजत अर्थात् चाँदी है) तो फिर यह उद्देश्य और विधेय दोनों पृथक-पृथक रूप में सत् है, परन्तु भ्रम में इनका गलत संबंध हो जाता है। जगत में रजत एवं सीपी दोनों की सत्ता है, परन्तु भ्रम में हम उन दोनों को उद्देश्य-विधेय रूप में जोड़ देते हैं। इस प्रकार भ्रम विषयों को लेकर नहीं, उनके संबंध को लेकर होता है। इसमें प्रस्तुत विषय विपरीत वस्तु के रूप में दिखाई देती है। यहाँ प्रभाकर के विपरीत कुमारिल भट्ट भ्रम को एक ही ज्ञान कहते हैं, जिसमें दो वस्तुओं का गलत संयोजन हो जाता है। यह भ्रम प्रभाकर की तरह भेदाग्रह नहीं है अपितु भ्रम वस्तु का अन्यथा रूप या विपरीत रूप बोध है। यहाँ भ्रम का कारण सादृश्य प्रतीति और नेत्रदोष - दोनों हैं।

→ प्रभाकर जहाँ भ्रम की व्याख्या ज्ञान के अभाव के रूप में करते हैं। कुमारिल भट्ट के अनुसार भ्रम ज्ञान का अभाव न होकर एक प्रकार का

बोध है। इनके अनुसार कारणसामग्री में दोष के कारण ही भ्रम की उत्पत्ति होती है।

→ प्रभाकर और कुमारिल भट्ट में अन्तर –

प्रभाकर	कुमारिल
→ प्रभाकर पाँच प्रमाण मानते हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान और अर्थापत्ति।	→ कुमारिल भट्ट छः प्रमाण मानते हैं – प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि।
→ प्रभाकर अभाव को पदार्थ नहीं मानते।	→ अभाव को पदार्थ माना गया है और इसकी व्याख्या हेतु अनुपलब्धि प्रमाण को स्वीकारा गया है।
→ प्रभाकर का ज्ञान विषयक मत 'त्रिपुटी प्रत्यक्षवाद' कहलाता है – ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय।	→ कुमारिल का ज्ञान विषयक मत 'ज्ञाततावाद' कहलाता है।
→ प्रभाकर का भ्रम सम्बंधी सिद्धांत 'अख्यातिवाद' कहलाता है। इनके अनुसार भ्रम समग्र ज्ञान का अभाव, दो आंशिक ज्ञानों का योग है – अतः गलत ज्ञान नहीं है।	→ कुमारिल भट्ट का भ्रम सम्बन्धी सिद्धान्त 'विपरीत ख्यातिवाद' कहलाता है। इनके अनुसार भ्रम एक ज्ञान है और वह गलत ज्ञान है।

Scanned with CamScanner